बूढ़े मुँह मुहाँसे

लोग ! देखें !! तमाशे

[प्रहसन]

श्रीराधाचरण गोस्वामी की हास्यमयी
लेखनी से लिखित ।

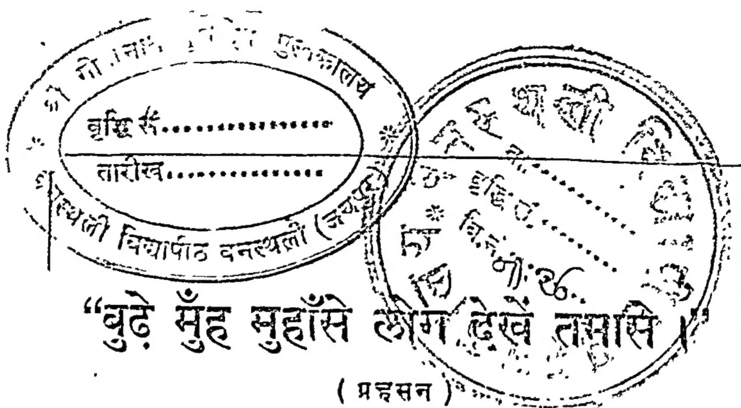
"घास पात जे खात हैं तिनहि सतावत काम ।
माल मलीदा खात जे तिनके मालिक राम ॥"

काशी ।

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुआ ।

सम्वत् १९५१ ।

दूसरी बार १०००] [मूल्य ≤)



"बुढ़े मुँह मुहाँसे लोग देखें तमासे।"

(प्रहसन)

प्रथमाङ्क—प्रथम गर्भाङ्क

स्थान

तालाब के ऊपर नीम के पेड़ की छाँह ।

मौला—अरे यार! अबको साल पीर की दर्गाह में कितनी सिन्नियां चढ़ाईं, पर किसी से कुछ नहीं भया । दस मन गेहूँ भी घर में नहीं आये, मर्जी गुसैंयां की ।

कालु०—अरे कहीं मेह के बिना भी गेहूँ होय हैं? देखें लाला अब के कहा करें?

मौला—और क्या करेंगे? भेज थोड़ेही छोड़ देंगे।

कालुआ—तो तू कहा करैगो?

मौला—मैं क्या अपनी ऐसी की तैसी करूँगा, अब के मर जाता तो अच्छा था। कहीं लाला ने हल और बैल नीलाम करा लिये, तो फिर भी मरे । जाने खुदा ताला की क्या मर्जी है । बाप दादे की झोंपड़ी भी कहीं न छोड़नी पड़े!

कालु०—लाला तो इतमें आवें हैं, अच्छा तो आज मैं मो तेरी ओर होकर दो चार बातें कहने में कसर न करूँगो।

(लाला नारायणदास का प्रवेश)

मौला – लाला साहब ! सलाम ।

नारा०—(वृक्ष के नीचे बैठकर) अरे मौला तू तो बड़ा बदमाश है किस्त क्यों नहीं देता वे ? (माला जपते हैं)

मौला—अजी लाला साहब ! अबकी फसल का हाल तो आप अच्छी तरह जानते हैं ।

नारा०—अरे हमें इससे क्या ? तुम्हारी फसल हो, चाहे न हो !

मौला—जी यह तो ठीक है, पर आप तो हमारे मां बाप हैं ।

नारा०—मर कम्बख्त ! सरकार तो हमें न छोड़ेगी । बतला किस्त देगा या नहीं ?

मौला—लाला साहब ! हम आपके सदां के रैयत हैं आप हमारे ऊपर मिहरबानी न करेंगे, तो फिर हम कहां जायँगे ? मैं तो इस वखत बारह आना से ज्यादा कुछ नहीं दे सका ।

नारा०—तू कुछ भला आदमी थोड़ाही है, तुझ से दो रुपये बारह आने लेने हैं, उसमें फक्त बारह आने देता है । कल्लू— !

कल्लू—जी !

नारा०—इस बेईमान को पकड़कर जमादार के पास तो ले जा।

कल्लू—जो हुकुम (मौला से) चल बे!

मौला—लालाजी मैं बड़ा गरीब असामी हूँ, आपही की बदौलत खा पीकर इतना बड़ा हुआ, अब कहां जाऊँ?

नारा०—ले जा न! खड़ा क्यों है?

कल्लू—(धक्का देकर) चल बे!

मौला—दुहाई लाला साहब की! दुहाई जमीदार की (कल्लू से) क्यों बे तू कहता था कि मैं तेरी ओर से दो चार बातें कह दूँगा, कुछ कहता क्यों नहीं?

कल्लू—तो तू तनक हट जा, (लाला से) लाला साहब!

नारा०—क्या रे?

कल्लू—हुजूर अबकी बेर मौला को छोड़ दीजिये।

नारा०—क्यों?

कल्लू—याने जा छोरी से अब के निकाह कियो है, वाकू आपने कभी देखी है?

नारा०—नहीं।

कल्लू—लालाजी! वाके रूप को आपसे कहा बड़ाई करूँ, वाकी उमर उन्नीस बरस की होगी। अब तक कोई लड़का बालो भी नाय भयो। और रँग वाको सोने को सो दम दम करे है।

नारा०—(माला जल्दी जपते २) एँ एँ क्या कहता है ?

कल्लू०—जी आपसे कुछ झूठ थोड़ेही कहूँ हूँ, आप वाकी देखें तो कह दीजिये।

नारा०—(सोचकर) मुसल्मानियों के मुंह से प्याज की ऐसी दुर्गन्ध आती है कि जी मिचलाने लगता है।

कल्लू—लालाजी! वो ऐसी नहीं है।

नारा०—(सोचकर) यवन! म्लेच्छ! मुसल्मान! क्या परलोक भी नष्ट करना है ?

कल्लू—लालाजी! मुसल्मान से क्या है ? आपने ही तो कई वेर मोसे कही कि ठाकुरजी महाराज गोपिन के सँग रास करते हैं।

नारा०—दीनवन्धो! "यथानियुक्तोस्मि तथा करोमि" और फिर स्त्री ? उनकी जात क्या ? वह तो साक्षात् प्रकृति स्वरूपा हैं। ऐसा तो हमारे शास्त्र में भी कहा है। बड़ी सुन्दरी है ? एँ अच्छा मौलाकू बुला लो।

कल्लू—मौला ? ह्यां आ।

मौला—हुकुम।

नारा०—अच्छा आज बारह आने ले करके तुझे छोड़ दें तो फिर बाकी कब देगा ? सच बतला।

मौला—लालाजी गुसैंयां करैं तो डेढ़ महीने के भीतरही दे दूँगा।

नारा०—अच्छा तो बारह आने के पैसे दीवानजी को दे आ।

भोला (आनन्द से) जो हुकुम लाला साहब! (स्वगत) बचा! बारह आने के पैसे तो गाँठ में हैं, और दो रुपये अँगोछे में बँधे हैं, जो बहुत मारपीट करते, तो सब दे देता। (प्रगट) सलाम लाला साहब!

(प्रस्थान)

नारा०—ओ कल्लू!

कल्लू—जी!

नारा०—इसको तू हाथ कर सकेगा?

कल्लू—जी क्यों? बीस पचीस रुपये खर्च करने पड़ेंगे!

नारा०—बीस पचीस रुपये! क्या कहता है!

कल्लू—जी या से कम नहीं, ज्यादा लगें, तब भी लग सकैं क्योंकि आखिर तो वो गाँव की बहू है।

नारा०—अच्छा हम जब दीवानखाने में चलें, तब याद दिला देना, रुपये दिये जायँगे।

कल्लू—जी हुकुम!

नारा०—(नेपथ्य की ओर देखकर) यह कौन है? विद्याधर?

(विद्याधर का प्रवेश)

कौन? विद्याधर! प्रणाम! ये क्यों?

विद्याधर –क्या कहूँ, बड़ा दुःख हुआ, हमारी मांजो का परलोक हो गया। (रोदन)

नारा०—क्या कहा ? ये कब हुआ ?

विद्या०—आज चौथा दिन है।

नारा०—क्या हुआ था ?

विद्या०—कुछ नहीं वहुत वृद्ध हो गई थीं।

नारा०—"हरेरिच्छा बलीयसी" भाई इसका सोच करना वृथा है।

विद्या०—यह ठीक है, अब मैं इस आपत्ति से जिस्में बच सकूं, वह आपको कर्त्तव्य है। जो कुछ हमारी वह्मत्र भूमि थी, वह तो आपके बाग में दब गई है और—

नारा०—ओः ! वो तो जो कुछ हुआ, उसकी अब क्या बात है।

विद्या०—जी हां, वह तो जो कुछ होना था, सो हो चुका "गतस्य शोचना नास्ति" वह तो ऐसे भी नहीं, वैसे भी नहीं, पर आपका बड़ा भरोसा रखते हैं। इससे जैसे बने इस ऋण से आपको रक्षा करनी होगी।

नारा०—महाराज ! यह हमारा बड़ा कुसमय है, अभी थोड़े दिनोंमेंही बीस पच्चीस हजार रुपये हमें सर्कारी खजाने में दाखिल करने पड़ेंगे।

विद्या०—जी आप राजा हैं, लक्ष्मी की कृपा से आपको

किस बात की कमी है ? आप तनक कटाक्ष कर दें तो हमारे से हजारों ब्राह्मणों का आप ऋण से उद्धार कर दें ।

नारा०—मैं इस समय तुम्हारा कुछ उपकार कर सकूं, ऐसा तो नहीं मालूम पड़ता । तुम कुछ और उपाय करो, खैर जो कुछ बना, तो पीछे देखा जायगा ।

विद्या०—लालाजी आप हमारे जमीन्दार हैं, राजा हैं, आपके आगे तो कुछ विशेष नहीं कह सकते । जो आप उचित समझें, करें, (दीर्घनिश्वास) तो मैं अब जाता हूँ ।

नारा०—दण्डवत ।

ओः इन्हीं लोगों ने मुझे खराब कर दिया, केवल दो ! दो ! दो ! और दूसरी बात नहीं—अरे कल्लू !

कल्लू—जी !

नारा०—क्यों वे देखने में तो वह खूब अच्छी है न ?

कल्लू—लाला साहब ! आपको गङ्गा की याद है ?

नारा०—कौन गङ्गा ?

कल्लू—जी, वह मिस्सरों की लड़की, जाकू आपने—(आ-धीक्ति) फिर वह यहां से भाग गई ।

नारा०—हां, वह लड़की देखने में अच्छी थी (दीर्घनिश्वास लेकर) सीताराम ! सीताराम ! प्रभो तुम्हीं सत्य हो। हां फिर उस गङ्गा का क्या हुआ ?

कल्लू—जी, अब तो वह बजाज हो गई। मौला की बीबी वा से भी अच्छी है।

नारा०—क्या कहता है? हां आज रात को ठीकठाक कर सकैगा?

कल्लू—जो आज न भयो, कल्ल पर्सों तक जरूर कर दूँगो।

नारा०—देख! कुछ रुपये का लोभ मत करना, जो खरच लगैगा मैं दूँगा।

कल्लू—जो हुकम (स्वगत) लाला जी ऐसे पागल न हों तो हम कैसे बचें।

नारा०—(नेपथ्य की ओर देखकर) अरे यह कौन है?

कल्लू—अजी ये नन्नो, और वाको मां रामा है, जल लेने जाय हैं।

नारा०—कौन नन्नो वे?

कल्लू—वही चैना तेली की बेटी।

नारा०—ये चैना तेली की बेटी है? ये तो गूदर में गिं-दौरा है?

कल्लू—ये आज दो दिन भये सुसराल से आई है।

नारा०—(स्वगत) गई न शिशुता की झलक झलक्यो जोबन अंग। दीपत देह दुहूँन मिलि मनों ताफता रंग॥

संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी।
अन्तरा दुस्तरा नस्युर्यदिरे मदिरेक्षणाः॥

कल्लू—(स्वगत) अब दीखै और रंग लगो। बूढ़े होने से नीयत बिगड़ जाय है कोई बुरी भली चीज़ आगे हो कर गई कि बस फिर लार टपक पड़ी।

नारा०—अरे कल्लू!

कल्लू—जी हां।

नारा०—अरे इसका कुछ कर सक्ता है?

कल्लू—जी ये कछू सहज बात नहीं है ये बड़े आदमी के घर व्याही है।

(घड़ा लेकर नन्नी और रामा का प्रवेश)

नारा०—अरी बड़ी बहू ये लड़की कौन है?

रामा—ये कहा लालाजी! आपने मेरी नन्नी कू नांय पहचानी।

नारा०—अरे ये तुम्हारी वही नन्नी है, अच्छा ठीक, ठीक, ईश्वर करे ये जीतो रहै। इस्का व्याह कहां हुआ है?

रामा—जी याको व्याह आगरे नत्था तेली के घराने में भयो है।

नारा०—हां हां वह बहुत भलो आदमी है। जमाई कैसो है?

रामा-(सगर्व) जमाई देखने में बहुत अच्छो है। प्राग में मदर्सा में लिखे पढ़े है। लाठ साहब ने वाकू कई वेर इनाम दियो, और अब बरसयें दिन वाकू किताब मिले है।

रामा—ये यहां महीने भर रहेंगी।

नारा०—(स्वगत) बस तभी तो काम बनेगा। अर्जुन ने अठारह दिन में ग्यारह अक्षौहिणी सेना को युद्ध में वध कर डाला। मैं क्या एक महीने में एक तेली की लड़की को वश नहीं कर सकूंगा (प्रगट) राम! राम! राम! सब तुम्हारी इच्छा!

रामा—लालाजी आपने कहा कहो?

नारा०—मैंने कहा चैना कहां है?

रामा—वे नोन लेने भरतपुर गये हैं।

नारा०—आवेगा कब?

रामा—चार पांच दिन में आने को कह गये है, लालाजी। तो अब हम जल भर लावें।

नारा०—अच्छा जाओ।

रामा—आ बेटो! आ!

(नन्नो और रामा का प्रस्थान)

नारा०—(स्वगत) चैना के न आते यह काम हो जाय, तो अच्छा (नेपथ्य की ओर देखकर) अहा! नन्नो क्या सुन्दरी है! कविजन नवयौवना स्त्री को मरालगामिनी कहते हैं, सो मिथ्या नहीं (प्रगट) अरे कल्लू!

कल्लू—जी (स्वगत) लाला अबकी फिर मारे पड़े।

नारा०—अबे इधर आ, इस बाबत कुछ कर सका है?

कल्लू—लाला साहब! यह मैं नहीं कर सकूंगी. पर मेरी मौसी कर सके तो मैं नहीं कह सकूं।

नारा०—तो जा दौड़कर अपनी मौसी से कह आव और देख इसमें जो खर्च होगा सो मैं दूँगा:

कल्लू—जो हुकम. तो मै चल्यो (जाते जाते) लाला आज कलपविर्छ हैं! देखें कल्लू कू आज कहा मिले? (प्रस्थान)

नारा०—(स्वगत) प्रभो, आपकी इच्छा, नदी का क्या चमत्कार रूप है, और थोड़ी थोड़ी चञ्चल भी है, देखें क्या हो?

(खिदमतगार का लोटा धोती लेकर प्रवेश)

नारा०—अब चलें सन्ध्या पूजा पाठ का समय हुआ (उठ कर) दीनबन्धो! जो आपकी इच्छा। आः इस नदी को यदि हाथ में कर सकूं!

(दोनों का प्रस्थान)

जवनिका पतन।

प्रथमाङ्क—द्वितीय गर्भाङ्क ।

(स्थान मौला के घर के आगे)

(मौला और छन्नो का प्रवेश)

मौला—क्या कहा ? पचास रुपैया ?

छन्नो - मैं क्या झूठ कहूँ हूँ।

मौला—(क्रोध से) ऐसा लुच्चा हरामजादा क्या हिन्दुओं में और कोई है? साला रैयत की जान लेता है, असामी का सब माल मता लूटकर पीछे से यह कहता है ?। देखूं तो सर्कार के घर इन्साफ है कि नहीं ? अब के काफिर के मुंह में हड्डी भर दूँ तब छोड़ूं। ऐसा मकदूर बचा का, मैं गरीब हूँ तो क्या कसब कराऊँगा ? हमारे खानदान से नव्वाब हैदराबाद की नौकरी करते आये हैं, हमारो बहिन भाञ्जी ने कभी कसब नहीं किया, सो क्या मैं अपनी औरत से कसब कराऊँ ? साला पाजी कहीं का।!!

छन्नो—अब क्यों बिना बात को बकते हो ? जब वह कुछ करै तो जो मन में आवे सो कर लेना। ये देखो कलुआ की मौसी सितावो फिर आती है।

मौला—चुड़ैल का सिर फोड़ दूँ तो कलेजे में ठण्ढक हो।

छन्नो—मैं नेक हट जाऊँ देखूं यह यहां आकर क्या करै।

(दोनों हट जाते हैं)

[सितावो का प्रवेश]

सितावो—(चारोंओर देखकर) थू थू ! मुसल्मान के घर में आकर के तो उलटो होय है। थू थू ! मुर्गा के पङ्ख, प्याज के छिलका । छिः छिः। पर कहा करूँ लाला जाने कब ये पाप छोड़ेंगे । इतने बूढ़े हो गये पर अब तक मन में ज्वान पट्ठाही बने हैं । आज तीन बरस से नौकरी करूँ हूँ इतने दिन में कितने भले घर की बहू बेटी, राँड़, सुहागन, मैंने खराब करीं, कछू ठीक नहीं (हँसकर) फिर लाला भगत भी बड़े, दिन भर माला हाथ मेंही रक्खें, सोमवार को एकादशी को व्रत करें। आहा! कैसी भक्ती। (चिन्ता से) भला जो भई सो भई, यह तो ठीक करूँ कि या लुगाई की कुछ बुरी भली कर सकूंगी कि नहीं। चैंना तेली की बेटी से यह सब बात नहीं बनेगी वो गरीब कङ्गाल की छोरी थोड़ेही है, जो दो चार रुपया देखकर नाचने लगे। और लाला ज्वान होते, तब भी कुछ बात नहीं, नन्नो गुस्सा होती, तो हँसी में बात टाल देती। अच्छो देखूं यह कहा कहै। (ऊँचे स्वर से पुकारकर) अरी छन्नो ! घर में है ?

[नेपथ्य से]

अरी कौन है ?

[छन्नो का प्रवेश]

छन्नो—सितावो ! कहा खबर है ?

सितावो—मौला कहाँ है ?

छन्नो—वो तो खेत में हल चलाने गया है।

सितावो -(स्वगत) आफत कटी वह आदमी है कि राच्छस है (प्रगट) तो छन्नो ! अब मोसो सच सच कह दे।

छन्नो—मैं क्या कह दूँ ?

सितावो—तू कहा कहेगी ? सोने के गहने पहर, मोती चुग, ह्यां बाँदी हो करके रहेगी ?

छन्नो—बहना ! अपने अपने नसीब की बात है। तू मुझ से जवान खसम छोड़कर बुड्ढे खसम के पास रहने की कहे है, कल्ल कूं वो मर जायँगे, तो मैं क्या करूँगी?

सितावो - ये सब अपने अपने भाग की बात है । इन बातन से कहीं काम चले है । ये देख पचीस रुपया लाई हूँ जो ये बात करे तो कह— रुपया दूँ। न करे तो तैसी कह, मैं जाती हूँ ।

छन्नो—तनक ठहरो, इतनी जल्दी क्यों करती हो ?

सितावो--जल्दी न करूँ, तो कहा करूँ, जो करनी है तो फिर देर मत कर।

छन्नो—(विचारकर) अच्छा ला, रुपया दे !

सितावो—देखियो, पीछे से हल्ला न हो।

छन्नो—इसको कुछ फिकर मत करो। मैं संझा कूं तुम्हारे घर आऊंगी। ला रुपया दे दें। तो फिर यह बात किसी को मालूम न हो।

सिताबो वाह श्याबास! यह भी कछू बात है। यह कोई सुनैगो, तो हमें जितनी लाज होगी, तुम्हें तो उतनी नहीं। हम हिन्दू तू मुसल्मान तुम्हारे जातपाँत तो नहीं तुम्हारे एक खसम मर जाय तो झट दूसरो खसम कर लो।

छन्नो—अच्छा हम तो राँड़ होकर के दूसरो निकाह कर लेती हैं, हिन्दू क्या करते हैं? अच्छा जो चाहे सो करो, ला रुपया ला?

सिताबो—यह ले।

छन्नो—(रुपये गिनकर) ये तो एक कम बीस रुपये भये।

सिताबो - हां छै रुपया मेरी दस्तूरी।

छन्नो - ना, ना, ये बात न होगी, दो रुपये ले ले।

सिताबो—ना, ना, में चार रुपया लूंगी।

छन्नो—अच्छा तो दो रुपये फेर दें।

सिताबो - ये ले—और देख संझा कूं या बगीचा में आय जैयो, मैं हांसे तोकूं ले जाऊंगी।

छन्नो—अच्छा, तो तू अब जा?

छितावो—देख ये कोई ऐरे गैरे के रुपया नहीं हैं ये रुपया छलछन्द करके नहीं पचैंगे, तो अब मैं जाऊँ हूं।

[प्रस्थान]

(मौला का प्रवेश)

मौला—(नेपथ्य को ओर देखकर क्रोध से) हरामजादी का सिर फोडूं तो मजा हो, गुसैंयां! यह काफर मुसल्मान की इज्जत खराब करैगा। देखियो मैं कहे देता हूँ, सो याद रखना, होशयार रहना, साला हाथ न लगाने पावै।

छबो—तुमसे जादा मैं समझती हूँ।

[प्रस्थान]

(विद्याधर पण्डित का प्रवेश)

विद्या०—(स्वगत) बहुत लकड़ी को जरूरत है, तो यह सूखी इमली न कटा डालें? हाय बालकपन में इस वृक्ष के नीचे कितना खेल कूद करते थे, वह याद करतेही चित्त चञ्चल हो जाता है (बड़ी लम्बी साँस लेकर) जाने दो इन बातों के सोच बिचार से क्या होगा (पुकारकर) अरे मौलाबकस।

मौला—महाराज! क्या कहते हो?

विद्या०—अरे देख! यह इमली का पेड़ कटाना है तू काट सकेगा?

मौला—काट क्यों नहीं सकूंगा ?

विद्या०—तो अपनी कुल्हाड़ी लेकर हमारे संग चल।

मौला—क्यों महाराज। लाला ने तुम्हें मां के दिन के लिये क्या दिया ?

विद्या०—अरे इन बातों से क्या काम ? देना तो एक ओर जो दस बीस बीघे ब्रह्मोदक जमीन थी, वह भी छीन ली और अब विपत्ति के समय में जाकर कहा तो कहने लगे कि हम आजकल बड़ी खटपट में हैं, कुछ नहीं दे सकते, फिर अब बहुत कहा, पांच रुपये देने लगे (दीर्घनिश्वास) सब परमेश्वर करता है।

मौला—(सोचकर) महाराज। ज़रा इधर आना, तुमसे कुछ बात कहूँगा।

विद्या०—क्या बातचीत है ? यहीं कह न ?

मौला—यहां नहीं—इधर।

विद्या०—चल।

(दोनों गये)

(सितावो और छन्नो का फिर प्रवेश)

सितावो—छन्नो। वा बगीचा में नहीं।

छन्नो—तो फिर मुझे कहां ले चलेगी, बता ?

सितावो—देख। ये पीपर के ऊपर महादेव को मठ है ना, ह्वां चलनो पड़ैगो, बस तू चार घड़ी रात गये या

पेड़ के नीचे ठड़ो रहियो, फिर मैं आऊंगी, जैसे बताऊं तैसे करियो ?

छत्री—अच्छा तो तू जा कोई को खबर न हो।

सितावो—ऐसी तू कौनसी ब्राह्मन बनिया है जो इतनी डरे है।

छत्री—सो हम जो कुछ हों, मेरा आदमी सुन लेगा, तो हम तुम दोनों की गर्दन काट डालेगा ?

सितावो - (डरकर) ये तो सच है मौला बड़ा राच्छस है। तो मैं अब जाऊँ।

[प्रस्थान]

छत्री – (मन में) देखूं आज रात में क्या तमाशा हो, अब चलूं खाना पका लूं।

[प्रस्थान]

(विद्याधर और मौला का फिर प्रवेश)

विद्या०—राम ! राम ! बुढ़ापे में भी यह रंग ? तिसमें भी मुसल्मानी । राम ! राम ! सचमुचही कलियुग आ गया । मौला—देख हमारी बात में खूब हुशियार रहियो। इसमें हमारी तेरी दोनों की बन पड़ेगी)

मौला—जो हुकुम, इसकी कुछ फिकार मत करो।

विद्या०—तो अब चल, कुल्हाड़ी कहां है ?

मौला—कुल्हाड़ी खेत में पड़ी होगी, चलो।

(इति प्रथमाङ्क)

द्वितीयाङ्क—प्रथम गर्भाङ्क ।

स्थान लाला नारायणदास का दीवानखाना ।

(लाला नारायणदास बैठे हैं)

नारा०—(स्वगत) आः ! क्या आज दिन नहीं कटैगा ? (जँभाई लेकर) दीनबन्धु दीनानाथ ! आपकी इच्छा । कितावों कहतो है कि नन्नी का मिलना मुश्किल है क्या कमबख्ती है! ऐसा उमदा मोने का कमल निकाल न सका । हा ! ससागर पृथ्वी को जीत करके अन्त में अर्जुन को क्या प्रमिला के हाथ से पराभव होना पड़ा? जो हो इस समय मोला की लुगाई को जो निकाला यह भी कुछ थोड़ा आनन्द नहीं है । यह भी देखने में बुरी नहीं है, उम्र थोड़ी और नवयौवन के मद से एकबार गिरी पड़ती है शास्त्र में लिखा है कि यौवन में कुकुरी भी धन्य है (चारोंओर देखकर) ओः ! अब भी दो तीन घड़ी दिन होगा । क्या गजब ।

(रामनारायण बाबू का प्रवेश)

कौन रामनारायण हो क्या ? आओ भाई ! आओ, कब आये ?

राम०—(प्रणाम करके बैठकर) जी कल रात्रि को आया ।

नारा०—तो कहो क्या खबरें हैं, सुनें तो ।



राम०—जी सब अच्छी खबरें हैं, बहुत दिन से घर नहीं आया सो अबकी महीने भर की छुट्टी लेकर आया हूँ।

नारा०—अच्छा किया। हमारे मथुरादास से भी मुलाकात हुई थी ?

राम०—जी मथुरादास से तो इलाहाबाद में रोजही मुलाकात होती थी।

नारा०—क्यों तुम तो दारागञ्ज में न रहते हो ?

राम०—जी रहता था, पर अब चौक में मकान ले लिया है।

नारा०—अच्छा मथुरादास का लिखना पढ़ना कैसा होता है ?

राम०—जी, चाचाजी, ऐसा क्लेवर लड़का तो स्यौर कालेज में दूसरा नहीं।

नारा०—ऐसा क्या लड़का कहा भाई ?

राम०—जी, क्लेवर अर्थात् सुचतुर, अकलमन्द।

नारा०—हां, ठीक, ठीक, यह तुम्हारी अंग्रेजी का लफ़्ज़ है। भाई ! यह सब हमारे सुनने में अच्छा नहीं मालूम पड़ता। ज़हीन या चालाक कहने से हम समझ सकते हैं, अच्छा रामनारायण। तुम बड़े सीधे लड़के हो, मथुरी कोई अधर्म्म की बात तो नहीं सीखता।

राम०—जी, अधर्म्म क्या ?

नारा०—यही, ब्राह्मणों की निन्दा, गङ्गाजी में स्नान करने से घृणा, यही सब किरिष्टानी मत !

राम०—जी यह सब तो मैं आपसे ठीक ठीक नहीं कह सकता।

नारा०—नहीं मैं जानता हूँ, मथुरी ऐसा काम कभी न करेगा वह मेरा लड़का है न ! सीताराम! सीताराम! अच्छा हमने सुना है कि इलाहाबाद में अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग सब एकाकार हुये जाते हैं। कायथ, ब्राह्मण, बनियां, खत्री, कलवार, चमार सब एक जगह बैठते उठते हैं और खाना पीना भी करते हैं? भाई! यह सच है?

राम०—जी बहुत झूठ भी नहीं है।

नारा०—क्या मुश्किल है! हिन्दूधर्म की मर्य्यादा अब नहीं रहैगी, और रहेगी फिर क्या? कलियुग का प्रताप तो दिन दिन बढ़ताही है (दीर्घनिश्वास लेकर) सीताराम!

(काल्लू का प्रवेश)

कौन?

काल्लू—जी! मैं काल्लू (एक ओर खड़ा हो जाता है)

नारा०—(इशारे करता है)

काल्लू—(इशारे करता है)

नारा०—(मन में) आः! आज क्या सन्ध्या नहीं होगी (प्रगट) अच्छा रामनारायण! सुनते हैं कि इलाहाबाद

में कोई २ बड़े आदमी हिन्दू मुसल्मान बावर्ची रखते हैं।

राम०—जी हां सुना है कि कोई कोई रखते हैं।

नारा०—थू! थू! क्या कहा? हिन्दू होकर मुसल्मान को रोटी खाते हैं राम! राम! छिः! छिः!

कल्लू—(मन में) मुसल्मान की रोटी खाने से तो जात जाय और वाकी लुगाई रखने से कछू नाय। वाह! वाह! लाला साहब की बड़ी समझ!

नारा०—मथुरी को अब बहुत दिन प्रयाग नहीं रक्खूंगा।

राम०—जी अभी मथुराप्रसाद को कालिज छोड़ाना किसी तरह मस्लहत नहीं है।

नारा०—क्या कहा? और ज्यादा अंग्रेजी पढ़ाकर क्या अपने कुल में कलङ्क लगाना है? और 'मरा बैल भी कहीं घास खाते देखा है' कहकर क्या बाप दादों का श्राद्ध तर्पण भी बन्द कराना है?

(नेपथ्य में शङ्ख, घण्टा, मृदङ्ग, करताल बजते हैं)

नारा०—आओ भाई, ठाकुरदर्शन करें।

राम०—जो हुकुम, चलिये।

(दोनों गये)

कल्लू—(स्वगत) अब लालाजी तो गये (चारोंओर देखकर) थोड़ी देर आराम तो करूँ (गद्दी के ऊपर बैठ जाता

है) क्या नरम मजे को बिछौना है। याके ऊपर बैठ के नींद आमने लगे है (ऊँचेस्वर से) अबे गणेशी !

(नेपथ्य में कौन ?)

कल्लू -- अबे मैं कल्लू । अरे गनेसी एक चिलम तमाखू खवा वे ।

(नेपथ्य में)

ठहरो खवाऊँ ।

कल्लू --(तकिया का सहारा लेकर) (स्वगत) अहा ! कैसी मौज की चीज है । लाला लोगही मजा करो -करें । मजे में दूध मलाई रबड़ी खानी, और तकिया पर सहारो देकर बैठे रहे, यासे ज्यादा और कौन सुखी है ?

(तम्बाकू लेकर गणेशी का प्रवेश)

गणेशी -- अबे ये क्या ? तू तो यहां बैठो है ?

कल्लू -- अबे एकबेर मौज के जनम तो सफल कर लें । ला हुक्का ला, लाला की फर्शी ले आ तो, तो और मजा हो (हुक्का लेता है)

गणेशी - अबे तेने लाला को सो हुक्का पीनो कहां से सीखो वे ? आहा हा !

कल्लू -- आहाहा ! तू एकबेर मेरो शरीर तो दाब दे ।

गणेशी -- चल साले ! मैं क्या तेरो नौकर हूं ? आहाहा !

कल्लू—अबे तेरे हाथ जोड़ूं, आ। अच्छा तू एकबार मेरो आँग दाब दे, फिर मैं तेरो आँग दाब दूँगो।

गणेशी--आहाहा! अच्छा! तो आ।

कल्लू—हुक्का उठा दूँ, आ।

गणेशी—(शरीर दाबता है)

कल्लू—चल बे कोई ऐसे भी दाबै है? आहाहा!

गणेशी—क्यों अब अच्छो लगै है? आहाहा!

कल्लू - आज यार खूब मजा कियो। आहाहा!

गणेशी—(नेपथ्य के आगे देखकर) भाग बे भाग। ये देख लाला आये।

(हुक्का लेकर हँसते हँसते गया)

कल्लू—(उठकर) बुड्ढे ने या बखत आय करके सब रङ्गत बिगाड़ दोनो। आहा! आज तो बुड्ढे को ठाठ देखकर हँसी आवै। यह घेरदार पाजामा, यह चिकन की चपकन। यह बनारसी सेला, और यह कलावत्तू का ताज! आहाहा!

(नारायणदास का पुनः प्रवेश)

नारा०—अबे कल्लू!

कल्लू—जी आयो!

नारा—अबे वो आ गई होंगी?

कल्लू—जी वे अब तक आ गई होंगी, आप चलें।

नारा०—जा तू आगे जाकर देख आ!

कल्लू—जो हुक्म।

(प्रस्थान)

नारा०—(स्वगत) ये ताज खूब माथे पर खुला है, मुसल्मान औरतें इसको खूब पसन्द करती हैं। और इससे यह भी तो एक मतलब बना कि गञ्जी चाँद ढक गई (उच्चैःस्वर से) अरे गणेशी!

(नेपथ्य में)

जी आया!

नारा०—हमारा हातबक्स और शीशा तो ले आ। (स्वगत) देखूं तनक अतर तो लगा लूं। मुसल्मान मर्द औरत बच्चे अतर की खुशबू खूब पसन्द करते हैं और छोटी शीशी अपने संग भी ले चलेंगे। क्या जाने उसके बदन में प्याज की बू आती हो, बस थोड़ा सा अतर लगा कर दूर हो जायगी।

(बक्स और शीशा लेकर गणेशी का प्रवेश)

नारा०—(शीशे में मुख देखकर अतर की शीशी लेकर बक्स फिर बन्द करके) ये ले जा, और जो कोई आवै तो कह देना कि लालाजी जप करते हैं।

प्रस्थान।

नारा०—(घूमकर) आः कल्लू तो अब तक नहीं आया बड़ा पाजी है न?

(कल्लू का पुनः प्रवेश)

क्या हुआ बे ?

कल्लू—मौसी वाकू ले गई है, आप चलिये ।

नारा०—तो चलो ।

(दोनों का प्रस्थान)

द्वितीय गर्भाङ्क ।

स्थान—बाग में टूटा फूटा शिवमन्दिर ।

विद्याधर और मौला का प्रवेश ।

विद्या०—अबे मौला !

मौला—जी ।

विद्या०—अबे यही तो शिवाला है, अभी तक तो कोई आया दीखता नहीं । खैर तो हम इस पीपल के पेड़ पर अभी छुप कर बैठे रहें ।

मौला—आपकी जैसी मर्जी हो ।

विद्या०—पर देख मैं जब तक इशारा न करूँ तू चुपचाप बैठा रहियो ।

मौला—पण्डितजी बैठा तो रहूँगा पर मेरे सामने कहीं लुगाई के हाथ लगाया, कै कुछ बेइज्जती या जबर्दस्ती करेगा तो साले का उसी वक्त सिर फोड़ दूँगा और मुझे कुछ उसकी दहशत भी नहीं है, मैंने दूसरे गाँव में ठिकाना कर लिया है ।

विद्या०—(स्वगत) आदमी क्या है, साक्षात् यमदूत है, उसमें भी आज गुस्सा है, न मालूम क्या कर बैठे (प्रगट) देख मौला, इस तड़का भड़की से काम न चलेगा, तो सब बात बिगड़ जायगी, तू ज़रा चुप होकर बैठा रह।

मौला--अरे जाओ पण्डित ! इस वक्त मुझे गुस्सा चढ़ा है, हाथ पाँव कटे जाते हैं, एक वक्त साला मिले, तो साले का सिर फोड़ दूं और गाँव छोड़ जाऊं !

विद्या०—तो फिर मैं इस बीच में नहीं हूँ जो मेरी बात न सुनेगा, तो मैं चला (गमनोद्यत)

मौला—अरे ठहर पण्डित ! इतना गुस्सा क्यों होता है ? अच्छा जो मैं कई दिन तक चुपचाप बैठा रहूँ, तो फिर तो उसे मजा चखा दूँगा ?

विद्या०—फिर क्यों नहीं ?

मौला—अच्छा तो चलो तुम जो कहोगे, सो करूँगा।

विद्या०—तो इस पेड़ पर चुपचाप बैठा रह।

[दोनों गये]

(सितावो और छन्नो का प्रवेश)

छन्नो—अरी बहन, सितावो। मुझे कहां ले आई ? बहन मुझे बड़ा डर लगता है। सांप खाय जायगा, कै क्या होगा कुछ कह नहीं सकी।

सितावो—अरी ये महादेव को मन्दिर है न! और दो चार पांच कोस नहीं चलनो पड़ैगो, तू यहां ठहर जा। लाला तौलों आये जायँ हैं।

छन्नो—ना बहन अँधेरा है डर लगता है। इस जंगल में कैसे दो जनें रहेंगे?

सितावो—(मन में) झूठ नहीं कहै है, जो अन्धकार है शरीर काँपै है, फिर यहां भूत को डर भी है (पीछे फिर कर देखकर) आः अब तो आते दीखते नहीं।

छन्नो तू यहां बैठी रह, मैं तो जाती हूँ (जाना चाहती है)

सितावो—(छन्नो का हाथ पकड़कर) जा मर छिनाल मैं रहकर कहा करूँगो? (मन में) हाय! मेरो कहा अब वो समय है, पके पान कोई खाय है (प्रगट) तू बहना! थोड़ी देर और ठहर। लाला आयेही समझ।

छन्नो—ना बहन! मुझे तेरे रुपया पैसा नहीं चहिये, मेरे मर्द को कहीं ये बात मालूम हो गई तो मुझे जीती न छोड़ेगा।

सितावो—अरी क्यों झूंठ झूंठ डरपै है? भला वो कैसे जानेगो? वो का यहां देखने आवेगो? फिर डर काहे को? तनक ठड़ो रह (सचकित मन में) अरी दैया या मन्दिर में तो कछू खटका भयो? राम! राम! राम! (छन्नो को पकड़ लेती है)

छन्नो—(दुःखित होकर) तू नहीं छोड़ती तो मत छोड़, क्या करूँ जो खुदा करेगा, सो होगा, तो चल इस मठ में घुस चलें, नहीं तो कोई इधर उधर से देख लेगा ।

सितावो—ना, ना, ना, यहीं अच्छी हैं (मन में) आः कहीं बूढ़ो डोकरा मर तो नहीं गयो ।

छन्नो—(चकित होकर) देख बहन, ये कौन दो जाने आते हैं! मैं तो या मठ में छिप जाती हूँ ।

सितावो—ना री ना! यहीं ठड़ी रहना । मोकू तो लाला से दिखाई पड़े हैं (देखकर) हां ये तो वेही हैं । और संग में कलुआ भी है । चलो! प्रान बचे ।

छन्नो—ना बहना । मैं तो जाती हूँ ।

सितावो—अरी ठड़ी रह, जायगी कहां ?

(लाला नारायणदास और कल्लू का प्रवेश)

सितावो—वाह लाला! ठड़े ठड़े कब से पांव दूख गये हैं । आपने इतनी देर कर दीनी, हम तो अब तक चली जातीं ।

नारा०—हां कुछ देर तो ज़रूर हो गई लेकिन हमारी जान साहब तो तशरीफ ले आईं (मन में) ओः! मुसल्मान होने से क्या बिगड़ गया ये लड़की रूप में तो साचात् लक्ष्मी है । घूड़े पर गुलाब का फूल है । (प्रगट कल्लू से) अबे तू आगे जाकर खड़ा हो जा, देख कोई इधर आवे नहीं ।

कल्लू—जो हुक्म।

नारा०—अरी सितावो! यह तो बड़ी शर्म करती है, क्या हमारी तरफ देखना भी नहीं (छन्नो से) जान एक दफा अपने गुले रुखसार से कुछ शीरीं कलाम तो फर्माओ कि यह जिन्दगी मजे से कटे। हरे २ इसमें शर्म क्या?

कल्लू—(मन में) अब हरे हरे क्यों? अल्लाह अल्लाह कहो।

नारा०—हा! यह नूरजहां क्या मौला से घर में अच्छी लगती है। यह तो बादशाह की बेगम होती तो खुलती 'कहीं कहीं गोपाल की गई सिटक्यो भूल।
काबुल में मेवा करी व्रज में टेंटी फूल॥'
हाय! चन्दे आब चन्दे माहताब! तुम्हारी नाजनी सूरत देखकर मेरा दिल कली कली खिल गया आहा!

सितावो—(मन में) लाला आज मरे कल दूसरा दिन, पर तब भी हँसी ठट्ठा नहीं भूले। राख में आब ताईं आग! अरे राम! (प्रगट) लालाजी! ये तो गाँव की मुसल्मान है, यह का यह सब समझै है।

नारा०—अरी तू चुप रह न?

सितावो—जो हुक्म।

छन्नो—अरी सितावो बहन! मैं तेरे पाँवों पड़ूं, तू मुझे यहां से ले चल।

सितावो - अरी मर! हजार दफा वही बात? लाला ने इतनी कही, पर तब भी तेरो मन नहीं चलै। हजार कहो, पर आखर तो मुसल्मान है न! कहनावत है न, 'मुसल्मान अच्छा ईमान' लाला साहब कूं देख कै कितनी ब्राह्मण, कायस्थ की बेटी दौड़ैं हैं तू तो मुसल्मान है. तेरे जात है कि पांत है? कै धरम करम है? यह समझ, कि बड़े भाग जो लाला की नज़र में चढ़ी।

छन्नो - ना बहन! मैं बड़ी देर से घर छोड़ करके आई हूँ, मेरा आदमी आवैगा, मोकू खोजैगा, मैं तो जाती हूँ

नारा० - (अञ्चल पकड़कर) जानमन् जानान् जान, जान सलामत! तू जायेगी, तो मैं अभो जाऊँगा तू मेरी जान; तू मेरे कलेजे का टुकड़ा, तू मेरे चौदह पुरखों की मा।

(पूर्वी)

मेरे तू जिय में बसत नवलप्रिया प्रानप्यारी।

तूही जीवन. तूही प्राण, तूही सकल गुणनिधान।

तो समान और नहिं मेरे हितकारी।

देखो! बूढ़ा समझकर मत डरना, तुम जो चली जाओगी, तो मैं अभी मर जाऊँगा।

कल्लू—(स्वगत) बुड्ढा ताजगञ्ज का, बुड्ढी मैनपुरी की।

सितावो—लालाजी! छन्नो कूं डर लगै है कहीं कोई जाकू देख न ले, तो या समा मन्दिर में चले जाओ न!

नारा०—(चिन्ता करके) ऐं ! मन्दिर में? हां तो खण्डित महादेव में तो शिवत्व नहीं इसकी तो व्यवस्था भी ले ली है । फिर क्या इस परी के लिये हिन्दूधर्म क्या चीज़ है ।

(नेपथ्य में गम्भीर स्वर से)

भला बदमाश बेईमान ! भला !

[सब को भय]

नारा०—(त्रास से चारोंओर देखकर) आं-आ-आ आ मैं नहीं, मैं नहीं ! अरे बाप रे ! यह क्या ? कहां जायँ ।

सिताबो—(काँपकर) राम ! राम ! राम ! मैं तो पहिले सेही जानैहो राम ! राम ! राम !

नारा०—अबे कल्लू ! इधर आ !

कल्लू (काँपकर पहले) बचूं तो ।

(नेपथ्य में हुङ्कारध्वनि)

सि०—ई ई ई ! (ज़मीन पर गिरकर मूर्च्छा आ जाती है)

नारा०—सीताराम ! सीताराम ! अरे राम ! क्या होगा ?

(नेपथ्य में] देख न, क्या होता है ?

नारा०—(हाथ जोड़कर कातर होकर) भाई ! मैं कुछ नहीं जानता, दुहाई है सर्कार की, मुझे माफ करो (साष्टाङ्ग प्रणिपात)

(मुंह ढाँपकर भोला का वेग से प्रवेश, कल्लू को थप्पड़ मारना, और उसका जमीन पर गिरना फिर नारायणदास को जमीन पर गेरकर इसकी पीठ पर बैठकर घूंसे मारना, और सितावो को लात मारकर भागना)

नारा०—आह रे ए ए !

(नेपथ्य में) विद्याधर का 'करमगति टारी नाहिं टरे' गाना और प्रवेश ।

कल्लू—अरे ये विद्याधर पण्डित आये, अरे अबको बचे, ब्राह्मन के पास भूत प्रेत नहीं आवें हैं (हाथ झुलाकर) अरे भाई ! भूत को हाथ बड़ो कड़ो है ।

विद्या०—अरे लाला साहब ! हैं ऐसे पड़े हैं, क्यों ? क्या हुआ ? ऐं ?

नारा०—(विद्याधर को देखकर उठकर) विद्याधर महाराज हैं ? अरे भाई आज भूत के हाथ से मर चुके थे, और क्या ? तुम आ गये, बड़ा अच्छा हुआ ।

सितावो—(होश में आकर) राम ! राम ! राम !

कल्लू—अरी मौसी ! भूत चलो गयो, अब डर नहीं, उठ ।

सितावो—(उठकर) वो गयो ! आः अब प्राण बचे । तो चल बेटा, अब यहां कहा करेंगे । मैं बची रहूँगी तो बहुत नौकरी मिल जायेंगी (विद्याधर को देखकर) अरे राम ! यह तो मिस्सरजी हैं ।

विद्या०—लालासाहब ! मैं इधर होकर जाता था, आदमी के चिल्लाने का शब्द सुनकर इधर चला आया कहिये तो यह बात क्या है ? आप इस समय यहां कैसे ? और ये लोग क्यों आये ? और ये तो मीला की बहू दिखलाई देती है ।

नारा०—(स्वगत) एक ओर बचा, तो दूसरी ओर आफत क्या करूँ (प्रगट विनयपूर्वक) भाई ! तुम तो सब जानते हो, मुझे लाजों मत मारो । मैंने जैसा काम किया, वैसा फल पाया । तो देखो भाई ! तुम्हारे हाथ जोड़कर कहता हूँ कि मुझे यह भिक्षा दो कि यह बात किसी को खबर न पड़े । बुड्ढी उम्र में इन बातों की चर्चा होने से हमारी इज्जत आबरू सब मिट्टी में मिल जायगी । तुम भाई हमारे घर के हो, और ज्यादा क्या कहूँ ?

विद्या०—यह क्या लाला साहब ! आप बड़े आदमी राजा हैं. मैं गरीब ब्राह्मण हूँ और जब से आपने हमारी वह ब्रह्मोत्तर ज़मीन ले ली, तब से दिन भर में खाने को भी नहीं जुड़ता तब भला मैं आपका 'आत्मीय' कैसा हो सकता हूँ ।

नारा०—बस, बस, रहने दो भाई ! मैं कल्ह ही तुम्हारी वह ज़मीन फेर दूँगा, और देखो ! तुम्हारी मां के श्राद्ध में

मैंने कुछ थोड़ाही बहुत दिया था, सो अब तुम को नगद पचास रुपये और दूँगा, पर इतना काम करो कि आज का यह कर्म किसी को मालूम न पड़े ।

विद्या०—(हँसकर) लाला साहब ! काम बहुत बुरा है इससे कहनाही पड़ता, पर आपने जब ब्राह्मण को कुछ दान करना स्वीकार किया है, तब इसका एक प्रकार प्रायश्चित हो गया । तब फिर मुझे इस बात के प्रसंग करने से क्या काम ? इसके लिये आप निश्चिन्त रहें ।

(स्वभाविक वेष से सीला का प्रवेश)

सीला—लाला साहब ! सलाम !

नारा०—(अत्यन्त व्याकुल होकर) ऐं यह क्या ? यह फिर क्या सर्वनाश हुआ चाहता है ?

सीला—(हँसकर) लाला साहब ! मैंने घर में आकर छनो को तलाश किया तो सब ने कहा कि इस फूटे मन्दिर की ओर सितावो के साथ गई है, तब ढूंढ़ते २ यहां आया मुझे क्या मालुम थो कि आप मुसल्मान होना चाहते हैं ? छनो तो छनो इससे अच्छी २ परीजाद आपके लिये ले आता। इसके लिये आपने इतनी तकलीफ क्यों करी ? तोवा ! तोवा !

नारा०—(सोचकर नम्र होकर) भाई मौला! मैंने सब समझ लिया, भाई मैंने तेरे ऊपर जैसा जुल्म किया, वैसी सज़ा पा ली। अब ज्यादा रहने दे, माफ कर, मैं तुझे भी कुछ दूँगा, पर भाई! यह बात किसी को मालूम न पड़े, यह मुझे माँगा दे। भाई मौला! मैं तेरे हाथ जोड़ूं।

मौला—यह क्या लालाजी! आप तो मुसल्मानों को इतनी गालियां देते थे, अब तो आप खुद मुसलमान होना चाहते थे, इससे बढ़कर और क्या मजे की बात है। तो यह बात तो मैं अपने बिरादरीवालों से कहूंगा।

नारा०—ग़ज़ब! क्या कहता है मौला! भाई विद्याधर! अबकी तो मैं खूब मारा पड़ा, तुम नहीं बचाओगे, तो और कुछ तजवीज नहीं है। तो एकबार मौला से तुम दो बातें समझाकर कह दो।

विद्या०—(कुछ हँस करके) अबे मौला! इधर आव, देख एक बात कहूँ।

(मौला को एक तरफ ले जाकर चुपचाप बातचीत करना)

नारा०—सीताराम! सीताराम! ऐसी आफत में भी आदमी पड़ता है। एक तो बेइज्जती दूसरे जात का डर। मुझे तो इस वक्त ऐसा दुःख है कि पृथ्वी के दो टुकड़े

हो जायें और मैं उसमें समा जाऊँ। अब कान पकड़ता हूँ, ऐसा काम कभी नहीं करूँगा।

छन्नो—(आगे बढ़कर हँसकर) क्यों? लाला साहब! क्या अब मुसलमानी अच्छी नहीं लगती?

नारा०—हट दुष्टिनी! अभागी! तेरे लियेही तो मेरी यह कम्बख्ती आई।

छन्नो—यह क्या लालाजी! मैं तो तुम्हारी कलेजा थी, और न जाने क्या २ थी। और अब मुझे दूर करते हो।

नारा०—फक्त तुझकोही दूर नहीं करता, यह बुरा काम हो आज से दूर किया। इसमें भी यदि नारायणदास को चेत न हो, तो इसके समान और कोई गधा नहीं।

कल्लू—(सब को सूचन करके) ओ मौसी! तो कल्लू को रोजगार तो गयो।

सितावो - उठ बेटा! जीते रहेंगे, तो भीख माँग खायेंगे, कौन जाने मुसल्मान की लुगाई के संग भूत रहे हैं अब मैं ऐसे काम में कभी हाथ न दूँगी।

विद्या०—लालाजी! आप मौला कूं दो सौ रुपया दे दीजिये, तो अभी सब झगड़ा मिट जाय।

नारा०—दो सौ रुपये! हे राम! धन से भी गया। विद्याधर भाई! कुछ कमती बढ़ती में न होगा?

विद्या०—जी नहीं इससे कम में किसी तरह न होगा।

नारा०—(सोचकर) अच्छा तो चलो, इतनाही दूँगा। मैंने सोचकर देखा तो इस कर्म की यही दक्षिणा उचित थी, जो हो आई। तुमलोगों से आज खूब उपदेश मिला। यह उपकार मैं सदैव मानूंगा। मैं जैसा महापापी था, वैसाही दण्ड भी पाया। अब भगवान से यही प्रार्थना है कि ऐसी दुर्मति फिर कभी न हो। बस मेरी वही कहावत हुई कि—

"बुढ़े मुंहमुहाँसे लोग देखें तमासे"

जवनिकापतनः।

समाप्त।

भारतजीवन यंत्रालय की संक्षेप सूची

उषाहरण नाटक
कलिकौतुक रूपक
क्याइसीको सभ्यता कहते हैं
कृष्णाकुमारी नाटक
जयनारसिंह की प्रहसन
ठगी की चपेट बग्गी की रपेट
धनंजयविजय व्यायोग
नाटक (नाटक बनाने की रीति)
वृद्धावस्था विवाह नाटक
बाल्य विवाह नाटक
ठगवृतान्तमाला चारो भाग पूरा
पद्मावती नाटक
प्रेमसुन्दर नाटक
भारतोद्धारक नाटक
महाअंधेर नगरी नाटक
मुद्राराक्षस नाटक
सतीनाटक ॥) दीपनिर्वाण

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा
भारतजीवन प्रेस बनारस ।

नारा०—तो जमाई प्रयाग मेंही रहता है ।

रामा—हां, अब कै बड़ी कहा सुनी भई, तब कहीं नन्नो आई। बड़े घर में लड़की देवे से यही तो आफत है ।

नारा०—हां, ये तो ठीकही है (स्वगत) इस लड़की का नवयौवन उपस्थित है, उसमें भी इसका पति विदेश में रहता है । यदि इतने पर भी मैं इसे वस न कर सका, तो धिक्कार है (प्रगट) अरी नन्नो ज़रा इधर तो आ, तुझे अच्छी तरह देखूं तो सही बालकपन में तुझे देखा था, अब तो तू इतनी बड़ी हो गई कि पहचानी भी नहीं जाती ।

रामा—जा बेटो सरम क्यों करे है ? लालाजी कू आगे बढ़ कर राम राम कर तेरे ताऊ लगे हैं ।

नन्नो—(आगे बढ़कर राम राम करके स्वगत) अरे ग़ज़ब! ये बुड्ढा कुछ कम थोड़ेही है । ये तो मुझे खाये जाता है । अरे ग़ज़ब ! ये क्या यह तो मेरी छातीही की तरफ देख रहा है—मर कम्बख़्त !

नारा०—(धीरे धीरे) अमी हलाहल मद भरे श्वेत श्याम रतनार। जियत मरत झुकि झुकि परत जिहि चितवत इक बार ॥

रामा—आपने कहा कही ?

नारा०—नहीं और कुछ नहीं, यही कि यह यहां कितने दिन और रहैगी ?